चौंसठ ऋद्धि विधान

माण्डला

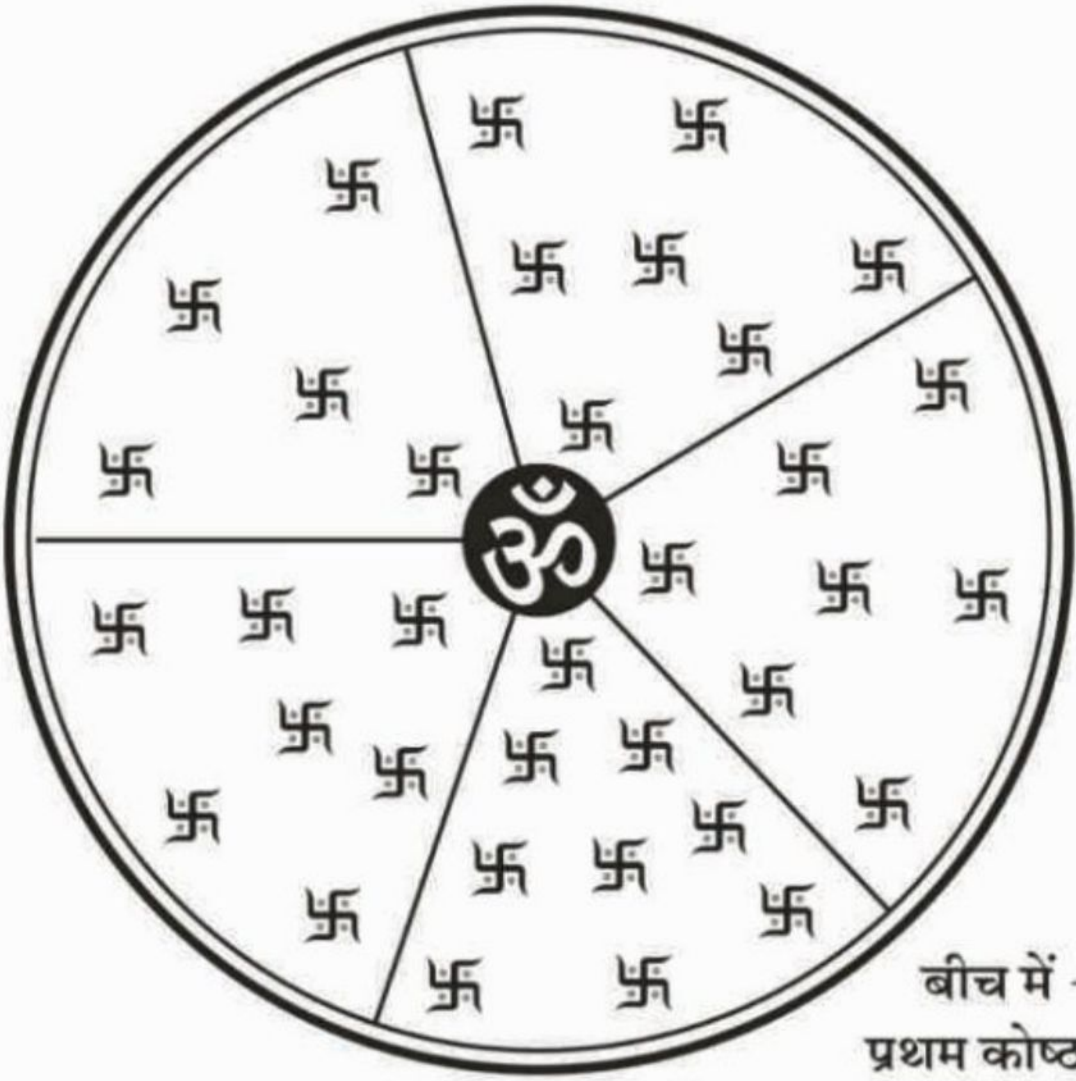

बीच में – ॐ

प्रथम कोष्ठ – 7

द्वितीय कोष्ठ – 5, तृतीय कोष्ठ – 7

चतुर्थ कोष्ठ – 9, पंचम कोष्ठ – 9

कुल – 35 अर्घ्य

रचयिता : प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

64 ऋद्धि का माहात्म्य, लक्षण व फल

दोहा- मंगलमय मंगल करण, मंगल जिन अर्हन्त।
चौंसठ ऋद्धीधर मुनी, तीन काल के संत।।

(शम्भू छन्द)

श्रेष्ठ तपस्या करने वाले, संत ऋद्धियाँ पाते हैं।
करने से एकाग्र ध्यान शुभ, मंत्र सिद्ध हो जाते हैं।।
मिथ्यावादी श्रावक कोई, मंत्र की सिद्धी करते हैं।
किन्तु ऋद्धी परम तपस्वी, जैन मुनी ही धरते हैं।।1।।
सिद्धी सर्व शुभाशुभ करने, वाली जग में कही विशेष।
ऋद्धी सबका हित करती है, ऐसा कहते वीर जिनेश।।
मुनिवर निज के हेतु कभी न, करते ऋद्धी का उपयोग।
जन-जन को सुख देने वाली, ऋद्धी मेटे भव का रोग।।2।।
गणधर त्रेसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, पाने वाले कहे ऋशीष।
केवल ऋद्धी पाते अर्हत्, होते जगती पति जगदीश।।
श्रेष्ठ ऋद्धी की शक्ति पाकर, भी न करते मान कभी।
परमेष्ठी को ध्याने वाले, करते जिन का ध्यान सभी।।3।।
ऋद्धीधारी मुनिवर जग में सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।
उस भव में या अन्य भवों में, परम मोक्ष को जाते हैं।।

बहुविधि सिद्धी पाने वाले, का कुछ निश्चित नहीं कहा।
मुक्ती पावें या न पावें, ऐसा निश्चित नहीं रहा।।4।।
जानके ऋद्धी की महिमा का, विशद हृदय श्रद्धान करें।
ऋद्धीधारी जिन संतों का, हृदय कमल में ध्यान करें।।
मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, उनकी महिमा हम गाएँ।
चरण-कमल में वंदन की शुभ, विशद भावना हम भाएँ।।5।।

(इति पुष्पांजलि क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागर जी का अर्घ्य

गुरुवर की हम महिमा गाते हैं, अपने हम सौभाग्य जगाते हैं।
चरणों में आते हैं, अर्घ चढ़ाते हैं, करते हैं गुरुपद नमन॥
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है,
गुरुवर का शुभ आशिष पाया है॥

ॐ हूँ प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर यतिवरेभ्यो नमः अर्घ्य निर्वपामिती स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि पूजा

स्थापना

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, चारण ऋद्धी के नौ भेद।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदी, तप्त ऋद्धी के सप्त प्रभेद।।
अष्ट भेद औषधि ऋद्धी के, बल ऋद्धी है तीन प्रकार।
भेद कहे छह रस ऋद्धी के, अक्षीण ऋद्धियाँ दो शुभकार।।

दोहा- पुण्य प्रदायी ऋद्धियाँ, चौंसठ हैं अभिराम।
आह्वानन् को हम यहाँ, करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि धारक सर्व ऋषि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं, अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं, अत्र मम् सन्निहितौ भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

यह नीर है मंगलकारी, जन्मादिक रोग निवारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: जलं निर्व. स्वाहा।

चंदन भवताप निवारी, जो अतिशय खुसबूकारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: चंदनं निर्व.स्वाहा।

अक्षत अक्षय फलकारी, हैं मोती के उन्हारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अक्षतं निर्व.स्वाहा।

ये पुष्प हैं खुशबूकारी, जो काम रोग विनिवारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: पुष्पं निर्व.स्वाहा।

नैवेद्य सरस मनहारी, है क्षुधा रोग परिहारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: नैवेद्यं निर्व.स्वाहा।

यह दीपक तिमिर विनाशी, है मोह महातम नाशी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: दीपं निर्व.स्वाहा।

सुरभित है धूप निराली, जो कर्म नशाने वाली।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: धूपं निर्व.स्वाहा।

फल ताजे रस मय भाई, हैं मोक्ष महाफलदाई।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: फलं निर्व.स्वाहा।

यह अर्घ्य विशद मनहारी, है शाश्वत पद कर्त्तारी।
हम चौंसठ ऋद्धी ध्यायें, ऋषिवर पद पूज रचाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सोरठा- देते शांती धार, शांती पाने हम यहाँ।
पा के पद अनगार, मोक्ष महाफल पाएँ हम।।

।। शान्त्ये शांतिधारा ।।

सोरठा- पुष्पांजलि मनहार, करते भक्ती भाव से।
वन्दन बारम्बार, देव शास्त्र गुरु के चरण।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा- चौंसठ ऋद्धी पूजते, जो भवि चित्त लगाए।
धन सम्पत्ती घर बसे, सकल विघ्न नश जाय।।

(चौपाई)

जय जय चौंसठ ऋद्धीधारी, तव पूजा करते नर नारी।
मुनि ने रत्नत्रय को धारा, शत्-शत् वंदन नमन हमारा।।1।।
पुण्यकर्म से नर भव पाया, जिसने जैन धर्म अपनाया।
मुनिवर सम्यक् तप बलधारी, शिवपथ के गणधर अधिकारी।।2।।
चौंसठ ऋद्धी धारें कोई, ताको आवागमन न होई।
बुद्धि ऋद्धि धारें मुनि सोई, उनके ज्ञान वृद्धि नित होई।।3।।

विक्रिया ऋद्धी बहु तन धारें, उसकी भक्ती हृदय उतारें।
चारण मुनि को पूजें भाई, भव- भव के आताप नशाई।।4।।
चारण मुनि करुणा नित पालें, जल पर चलते जल ना हालें।
तप करके सब करम खिपावें, तप से शुक्ल ध्यान उपजावें।।5।।
कर्म निर्जरा तप से होई, तप से शिव सुख संपद सोई।
बलधारी मुनि भव दुखहारी, अनुपम सुखकर मुनि बल धारी।।6।।
जय जय औषधि ऋद्धी धारी, सकल व्याधि क्षण में तुम हारी।
जो भी नाम तिहारे गावें, शिव स्वरूपमय हो सुख पावें।।7।।
रोग-क्षुधा रस ऋद्धि निवारें, सब प्रकार अमृत बरसावें।
मुनि अक्षीण महानस धारें, भव सागर से पार उतारें।।8।।
मुनि की भक्ति सदा हम गाएँ, भव-भव के सब पाप नशाएँ।
मन वच तन मुनिवर को ध्याएँ, सुख संपद जय सौख्य कराएँ।।9।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान जगाएँ, सम्यक् तप जीवन में पाएँ।
यही भावना रही हमारी, पूर्ण करो तुम हे त्रिपुरारी!।।10।।
पूजा करके जिनगुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
'विशद' ज्ञान हम भी प्रगटाएँ, कर्म नाश कर शिव पुर जाएँ।।11।।

दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर मुनी, तीन लोक सुखदाय।
तिनको पूजें अर्घ्य ले, केवल ज्ञान जगाय।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक मुनीभ्य: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- चौंसठ ऋद्धीधर ऋषी, संयम तप के ईश।
उनके गुण पाने विशद, चरण झुकाते शीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत ।।

चौंसठ ऋद्धि अर्घ्यावली

दोहा- तपकर चौंसठ ऋद्धियाँ, पाते हैं ऋषिराज।
करके जिनकी वन्दना, होंय सफल सब काज।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

अवधिज्ञान ऋद्धीधर ज्ञानी, होते जग-जन के कल्याणी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।1।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञान ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋद्धि मनःपर्यय जो पाते, पर के मन की बात बताते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।2।।

ॐ ह्रीं मनःपयर्य ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

केवलज्ञान ऋद्धि के धारी, अनन्त चतुष्टय धर शिवकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।3।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

बीज भूत मुनि ऋद्धि जगावें, सर्व ग्रन्थ का सार बतावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।4।।

ॐ ह्रीं बीजभूत ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

रत्न कोष्ठ में भिन्न दिखावें, कोष्ठ बुद्धि मुनिवर त्यों पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।5।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

पदानुसारिणी ऋद्धी पावें, पद सुन ग्रन्थ का सार बतावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।6।।

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।7।।

ॐ ह्रीं संभिन्न संश्रोत ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूर स्पर्श ऋद्धि मुनि पाएँ, दूर स्पर्श की शक्ति जगाएँ।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।8।।

ॐ ह्रीं दूर स्पर्श ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूरास्वाद ऋद्धि प्रगटावें, स्वाद दूर वस्तू का पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥9॥

ॐ ह्रीं दूरास्वाद ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूर घ्राण ऋद्धी जो पावें, दूर घ्राण की शक्ति जगावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥10॥

ॐ ह्रीं दूर घ्राण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूर श्रवण ऋद्धी धर जानो, दूर वस्तु के श्रोता मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥11॥

ॐ ह्रीं दूर श्रवण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दूरावलोकन ऋद्धि जगावें, दूर वस्तु अवलोकन पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥12॥

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥13॥

ॐ ह्रीं अष्टांग महानिमित्त ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, सूक्ष्मत्व ऋद्धि के रहे प्रचारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।14।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा श्रमण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, संयम ज्ञान निरूपणकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।15।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दश पूर्वित्व ऋद्धि धर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।16।।

ॐ ह्रीं दश पूर्वित्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुतधारी मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।17।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्वी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।18।।

ॐ ह्रीं प्रवादित्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अणिमा ऋद्धीधर ऋषि जानो, अणु सम देह बनावे मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥19॥

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

महिमा ऋद्धी जो ऋषि पावें, उच्च मेरु सम देह बनावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥20॥

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषिवर लघिमा ऋद्धि जगावें, आक तूल सम देह बनावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥21॥

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मुनिवर गरिमा ऋद्धी धारी, देह बनाते हैं जो भारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥22॥

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

आप्ति ऋद्धि धर भूपर होवें, सूर्य चंद को भी जो छूवें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥23॥

ॐ ह्रीं आप्ति ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषि प्राकम्य ऋद्धि प्रगटावें, जल पे भू सम चलते जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥24॥

ॐ ह्रीं प्राकम्य ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषि ईशत्व ऋद्धि जो पावें, वे त्रैलोक्य अधिपति हो जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥25॥

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषिवर ऋद्धि वशित्व जगावें, प्राणी सब वश में हो जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥26॥

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अप्रतिघात ऋद्धि जो पावें, घुसकर गिरि के बाहर जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥27॥

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अन्तर्धान ऋद्धि ऋषि पाते, क्षण में ही अदृश हो जाते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥28॥

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

कामरूप ऋद्धी के धारी, रूप बनावें कई प्रकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥29॥

ॐ ह्रीं कामरूप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

नभ चारण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर होते गगन विहारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥30॥

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

जल चारण शुभ ऋद्धि जगावें, हिंसा बिन जल पर चल जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥31॥

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

जंघा चारण ऋद्धि जगावें, जांघ उठाए बिन चल जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥32॥

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अग्नि शिखा ऋद्धी प्रगटावें, अग्नि शिखा पर चलते जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥33॥

ॐ ह्रीं अग्नि शिखा ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

पुष्प चारण ऋद्धी मुनि पाते, फूल पे हल्के हो चल जाते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।34।।

ॐ ह्रीं पुष्प चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मेघ चारण ऋद्धी मुनि पाएँ, मेघ पर गमन शक्ति जगावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।35।।

ॐ ह्रीं मेघ चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

तन्तू चारण ऋद्धी धारी, तन्तू पे चलते अविकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।36।।

ॐ ह्रीं तन्तू चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ज्योतिष चारण ऋद्धी धारी, गगन गमन करते अविकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।37।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष चारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मरुचारण ऋद्धीधर ज्ञानी, चलें वायु पे हो ना हानी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।38।।

ॐ ह्रीं मरुचारण ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दीप्त ऋद्धि जो मुनिवर पावें, देह कांति ऋषिवर विकशावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।39।।

ॐ ह्रीं दीप्त ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

तप्त ऋद्धि ऋषिवर प्रगटाते, उनके धातू मल छय जाते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।40।।

ॐ ह्रीं तप्त ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

महा उग्र तप ऋद्धी पावें, घोर सुतप की शक्ति जगावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।41।।

ॐ ह्रीं उग्र तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋद्धि घोर तप पाने वाले, विशद घोर तपि ऋषी निराले।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।42।।

ॐ ह्रीं घोर तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

घोर पराक्रम ऋद्धि जगावें, भू को ऊपर ऋषी उठावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।43।।

ॐ ह्रीं पराक्रम ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

महोपवास की शक्ति प्रदायी, परम घोर तप ऋद्धि बताई।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।44।।

ॐ ह्रीं महोपवास ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

घोर बह्मचर्य तप धर होवें, स्वप्न में भी बह्मचर्य ना खोवें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।45।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य तप ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मनबल ऋद्धी धर अनगारी, द्वादशांग श्रुत चिन्तनकारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।46।।

ॐ ह्रीं मन बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषी वचन बल ऋद्धी पावें, सब श्रुत पाठ की शक्ति जगावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।47।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

ऋषी काय बल पाएँ ऋद्धी, तन में होवे बल की वृद्धी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।48।।

ॐ ह्रीं काय बल ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

आमर्षौषधि ऋद्धी धारी, जन-जन के हों रोग निवारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।49।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

क्ष्वेलौषधि धर का कफ आदी, का स्पर्श नशाए व्याधी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।50।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

जलौषधी ऋद्धी के धारी, का जल्ल गाया रोग निवारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।51।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

मलौषधि ऋद्धी ऋषि पावें, उनका मल सब रोग नशावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।52।।

ॐ ह्रीं मलौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

विडौषधि ऋषि का मल जानो, रोग नशाए ऐसा मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।53।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

सर्वौषधि ऋद्धी मुनि पावें, वायु स्पर्श से रोग बिलावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।54।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

आशीर्विष ऋद्धी प्रगटावें, वचन बोलते जहर चढ़ावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।55।।

ॐ ह्रीं आशीर्विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दृष्टी निर्विष ऋद्धी पावें, दृष्टि डालते रोग नशावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।56।।

ॐ ह्रीं दृष्टि निर्विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

आर्श्याविष औषधि के धारी, जिनके वचन हैं रोग निवारी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।57।।

ॐ ह्रीं आर्श्याविष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

दृष्टी विष ऋद्धी जो पाते, दृष्टि डालते जहर चढ़ाते।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।58।।

ॐ ह्रीं दृष्टी विष ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

क्षीर स्रावि ऋद्धी प्रगटावें, नीरस भोजन क्षीर सा पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।59।।

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

घृत स्रावी रस ऋद्धी भाई, घृत सम भोजन हो सुखदायी।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।60।।

ॐ ह्रीं घृत स्रावी रस ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

कर में मधु स्रावी के जानो, भोजन मधु सम होवे मानो।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।61।।

ॐ ह्रीं मधु स्रावी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अमृतस्रावी ऋद्धि जगावें, अमृत सा भोजन ऋषि पावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।62।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अक्षीण संवास ऋद्धी पावें, चक्रवर्ति की सैन्य समावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी।।63।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

अक्षीण महानस ऋद्धि उपावें, सेना चक्री की जिम जावें।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥64॥

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

चौंसठ ऋद्धि भावना भायें, विशद शांति सुख प्राणी पाएँ।
ऋद्धी श्रेष्ठ है मंगलकारी, अनुपम इच्छित फल दातारी॥65॥

ॐ ह्रीं चौंसठ ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं।

जयमाला

दोहा- मंगलमय मंगल परम, मंगलमयी त्रिकाल।
चौंसठ हैं शुभ ऋद्धियाँ, गाते हैं जयमाल।।

।। शम्भू छन्द ।।

श्रेष्ठ तपस्या करने वाले, संत ऋद्धियाँ पाते हैं।
करने से एकाग्र ध्यान शुभ, मंत्र सिद्ध हो जाते हैं।।
मिथ्यावादी श्रावक कोई, मंत्र की सिद्धी करते हैं।
किन्तु ऋद्धी परम तपस्वी, जैन संत ही धरते हैं।।1।।
सिद्धी सर्व शुभाशुभ करने, वाली बड़ी विशेष कही।
ऋद्धी सबका हित करती है, मंगलमय जो श्रेष्ठ रही।।
मुनिवर निज के हेतु कभी न, करते ऋद्धी का उपयोग।
जन-जनको सुख देने वाली, ऋद्धी मैटे भव का रोग।।2।।

गणधर त्रेसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, पाने वाले कहे ऋशीष।
केवल ऋद्धी पाते अर्हत्, होते जगती पति जगदीश।।
श्रेष्ठ ऋद्धि की शक्ती पाकर, भी न करते मान कभी।
परमेष्ठी को ध्याने वाले, करते जिनका ध्यान सभी।।3।।
ऋद्धीधारी मुनिवर जग में, सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।
उस भव में या अन्य भवों में, परम मोक्ष को जाते हैं।।
बहुविधि सिद्धी पाने वाले, का कुछ निश्चित नहीं कहा।
मुक्ती पावें या न पावें, ऐसा निश्चित नहीं रहा।।4।।
जानके ऋद्धी की महिमा का, विशद हृदय श्रद्धान करें।
ऋद्धीधारी जिन संतों का, हृदय कमल में ध्यान करें।।
मोक्ष मार्ग के राही हैं जो, उनकी महिमा हम गाएँ।
चरण-कमल में वंदन की शुभ, विशद भावना हम भाएँ।।5।।

दोहा- पूज्य हैं तीनों लोक में, ऋषिवर ऋद्धीवान।
भाव सहित जिनका 'विशद', करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं चतुः षष्ठी ऋद्धि धारक मुनीश्वरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सम्यक् तप से जीव यह, पाए ऋद्धि प्रधान।
जिनकी अर्चा कर मिले, हमको शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

चौंसठ ऋद्धि चालीसा

दोहा- नवदेवों को नमन कर, नव कोटी के साथ।
तीर्थंकर चौबीस के, चरण झुकाते माथ।।
चौंसठ ऋद्धी का विशद, चालीसा शुभकार।
गाते हैं हम भाव से, नत हो बारम्बार।।

।। चौपाई ।।

पुण्योदय प्राणी का आवे, पावन मानव जीवन पावे।।1।।
देव-शास्त्र-गुरु का श्रद्धानी, होवे अनुपम सम्यक् ज्ञानी।।2।।
संयम धार बने अनगारी, अन्तर बाह्य सुतप का धारी।।3।।
साधक अपने कर्म खिपावें, पावन केवलज्ञान जगावें।।4।।
अवधिज्ञान ऋद्धी के धारी, मनःपर्यय ज्ञानी अविकारी।।5।।
केवलज्ञान ऋद्धि मुनि पाएँ, कोष्ठ ऋद्धि अनुपम प्रगटाएँ।।6।।
ऋषिवर बीज ऋद्धि जो पावें, सर्व शास्त्र का सार बतावें।।7।।
संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी।।8।।
पदानुसारणी ऋद्धी भाई, दूर स्पर्श ऋद्धि शुभ गाई।।9।।
दूर श्रवण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर दूरास्वादन कारी।।10।।
दूर घ्राणत्व ऋद्धि मुनि पावें, दूरावलोकन ऋद्धि जगावें।।11।।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि शुभ गाई, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि बतलाई।।12।।
ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, सम्यक् ज्ञान निरूपण कारी।।13।।
दश पूर्वित्व ऋद्धिधर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी।।14।।

ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुत धारी मानो।।15।।
ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी, पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ।।16।।
अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता।।17।।
जंघा चारण ऋद्धी धारी, अग्नि शिखा चारण शुभकारी।।18।।
श्रेणी चारण ऋद्धी पावें, ऋषि फल चारण ऋद्धि जगावें।।19।।
जल चारण जल पे चल जावें, तन्तू चारण तन्तु पे जावें।।20।।
पुष्प ऋद्धिधर पुष्प विहारी, बीजांकुर शुभ ऋद्धि धारी।।21।।
नभ चारण ऋषि नभ में जावें, अणिमा से लघु रूप बनावें।।22।।
ऋषि महिमा धर महिमा शाली, लघिमा ऋद्धि हल्की वाली।।23।।
गरिमा ऋद्धी से हों भारी, मन वच काय ऋद्धि बल धारी।।24।।
कामरूपणी है कई रूपी, अन्तर्धान से होय अरूपी।।25।।
ईशत्व ऋद्धी ईश बनाए, वश में ऋद्धि वाशित्व कराए।।26।।
ऋद्धि प्राकाम्य है इच्छाकारी, आप्ति ऋद्धि है उच्च प्रकारी।।27।।
अप्रतिघात घात परिहारी, तप्त ऋद्धि मल मूत्र निवारी।।28।।
दीप्त ऋद्धि शुभ दीप्ति बढ़ावे, महा उग्र तप शक्ति जगावे।।29।।
ऋद्धि घोर तप क्लेश निवारी, घोर पराक्रम ऋद्धी धारी।।30।।
परम घोर तप ऋद्धि जगावें, घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धी पावें।।31।।
आमर्षौषधि ऋद्धि जगावें, सर्वौषधि ऋद्धी ऋषि पावें।।32।।
आशीर्विष ऋद्धि के धारी, मुनि दृष्टि निर्विष अविकारी।।33।।
क्ष्वेलौषधि ऋद्धी प्रगटावें, विडौषधी ऋद्धि मुनि पावें।।34।।

जल्लौषधि मल्लौषधि धारी, आशीर्विष ऋषिवर अनगारी।।35।।
दृष्टीविष रस ऋद्धि जगावें, क्षीर स्रावि रस ऋद्धी पावें।।36।।
घृत स्रावी मधु स्रावी जानो, अमृत स्रावी ऋषिवर मानो।।37।।
अक्षीण संवास ऋद्धि जगाएँ, अक्षीण महानस ऋद्धि पावें।।38।।
मुनिवर उत्तम संयम धारी, कहे ऋद्धियों के अधिकारी।।39।।
जो भी ऋषियों के गुण गावें, 'विशद' ऋद्धियों का फल पावें।।40।।

दोहा–चालीसा चालीस यह, पढ़े सुने जो पाठ।
जीवन मंगलमय बने, होवें ऊँचे ठाठ।।
दुख दारिद्र को नाशकर, जीवन होय निरोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य मय, पाए 'विशद' शिव भोग।।

जाप्य : ॐ ह्रीं चतुषष्ठी ऋद्धीभ्यो नमः।

चौंसठ ऋद्धि आरती

तर्ज- ॐ जय......

ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ, स्वामी चौंसठ ऋद्धि महाँ।
आरति करते हम मुनियों की, होवें जहाँ - जहाँ।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ
प्रथम आरती बुद्धि ऋद्धिधर, की करने आए।
स्वामी ....

ऋद्धि विक्रिया की करने को, दीप जला लाए।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

मुनि चारण ऋद्धी धारी के, चरणों सिर नाते।
स्वामी ....

तप ऋद्धीधारी मुनियों के, अतिशय गुण गाते।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

बल ऋद्धीधारी मुनियों के, बल का पार नहीं।
स्वामी ....

औषधि ऋद्धीधारी मुनिवर, मिलते कहीं-कहीं।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

रस ऋद्धीधारी मुनियों की, महिमा शुभकारी।
स्वामी ....

अक्षीण महानश ऋद्धीधारी,मुनिवर अविकारी।।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ

ऋद्धीधर मुनियों की आरति, मंगलरूप कही।
स्वामी ....

'विशद' आरती करने वाले, पावें मार्ग सही।
ॐ जय चौंसठ ऋद्धि महाँ